

वार्तालाप—431, निलंगा—1 (महाराष्ट्र), दिनांक—1.11.07
Disc.CD-431, dated 1.11.07 at Nilanga-1 (Maharashtra)

समय—2.38—6.10

जिज्ञासु — बाबा विदेशी बन करके आये हैं, वास्तव में वो विदेशी नहीं है; परंतु वो ऐसी कौनसी एक्टिविटीज हैं जो उनको विदेशी बना देती है?

बाबा — बना देती हैं? बना नहीं देती, बनकर के आये हैं।

जिज्ञासु — तो वो कौनसी एक्टिविटीज है?

बाबा — बनकर के इसलिए आये हैं कि दुनियाँ स्वदेशी बन गयी है या विदेशी बन गयी है? (किसी ने कहा — विदेशी) विदेशी किस आधार पे बन गयी है? स्वदेशी थे तो एक की प्रीति एक से ही होती थी। राधा की दृष्टि कृष्ण में ही डूबती थी और द्वापरयुग से जबसे विदेशी बने तो इंद्रियाँ व्यभिचारी हो गयी। ये विदेशियों ने आकरके ऐसा जाल फैलाया काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का कि सारी दुनियाँ विदेशी बन गयी। विदेशी हुए व्यभिचारी और जो असली स्वदेशी थे वो थे अव्यभिचारी।

Time: 2.38-6.10

Student: Baba has come as a foreigner (*videshi*); actually he is not a foreigner, but which are those activities that make him a foreigner?

Baba: Do they make him? They do not make him (a foreigner); he has come as a foreigner.

Student: So, which are those activities?

Baba: He has come as a foreigner because, has the world become *swadeshi* (belonging to the deity religion or religions that originated in India) or *videshi*? (Someone said — *videshi*) On what basis has it become *videshi*? When they (the people) were *swadeshi*, one person used to love only one person. Radha's eyes used to see only Krishna and ever since we became *videshi*, from Copper Age, the organs became adulterous. The *videshis* came and spread out such a net of lust, anger, greed, attachment, ego that the entire world became *videshi*. *Videshis* are adulterous and the true *swadeshis* were unadulterous.

इसलिए बाप सारी दुनियाँ का कल्याण करने के लिए आये हैं या सिर्फ भारत का कल्याण करने के लिए आये हैं? सारी दुनियाँ का कल्याण करने के लिए आये हैं। सारी दुनियाँ के संसर्ग—सम्पर्क में आना पड़े या सिर्फ भारतवासियों का उद्धार करने से ही काम चल जायेगा? अगर दूसरे धर्म की आत्मायें, दूसरे धर्मखंड के लोग स्वदेशी नहीं बनेंगे नम्बरवार तो उनको सद्गति नहीं मिलेगी। कम से कम एक जन्म की सद्गति सबको मिलनी है और फिर भारतवासी भी एक जैसे नहीं हैं। कोई तो आदि से लेकर के अंत तक स्वदेशी हैं। अपने धर्म के पक्के हैं; लेकिन वह तबक्का बहुत थोड़ा है और कोई ऐसे है ज्यादा तादाद में जो और—और धर्मों में कनवर्ट होते रहे हैं। हिन्दू ही दूसरे धर्मों में कनवर्ट हुए हैं। कनवर्ट होकर के विदेशी बन गये। उन विदेशियों को स्वदेशी बनाने के लिए बाप को भी विदेशी बनना पड़ता है नहीं तो बच्चों से मिल नहीं सकते।

That is why, has the Father come to benefit the entire world or to benefit just India? He has come to benefit the entire world. Will He have to come in contact and connection with the entire world or will it suffice if He uplifts just the Indians (*Bharatwasis*)? If the souls belonging to the other religions, people of other religious lands do not become *swadeshis* number wise, they will not attain the true salvation. Everyone is bound to attain true salvation at least for one birth, besides Indians too are not alike. Some are *swadeshis* from the beginning to the end. They are firm in their religion, but that section is very small and some are such that they are in large numbers and have been converting to other religions. Only the Hindus have converted to other religions. They converted and became *videshis*. Even the

Father has to become a foreigner to transform those *videshis* into *swadeshis*; otherwise He cannot meet His children.

स्वदेशी का गायन है मर्यादा पुरुषोत्तम राम। राम की मर्यादा एक में थी या अनेक में थी? (जिज्ञासु – एक में थी।) उन्होंने तो राम को त्रेता में डाल दिया। वास्तव में संगमयुग की बात है। संगमयुग में राम का लव एक के सिवाय और कोई में भी नहीं होता। एक शिवबाबा दूसरा न कोई। इसलिए राम की आत्मा को त्रिमूर्ति में दिखाया गया है शंकर के रूप में पार्ट बजाने वाला और कृष्ण की आत्मा को दिखाया है ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाने वाला।

The praise of a swadeshi is *Maryada purushottam* Ram (the one who is the highest among all in following the code of conduct) . Was Ram loyal to one or many? (Student: he was loyal to one.) They (in the path of bhakti) have put Ram in the Silver Age (*Treta*). Actually, it is about the Confluence Age. In the confluence Age, Ram does not have love for anyone except one. One Shivbaba and none other. That is why Ram's soul has been shown as playing the part of Shankar in *Trimurty* and Krishna's soul has been shown to be playing a part in the form of Brahma.

समय—6.11—6.45

जिज्ञासु – ब्रह्मा बाबा ने बच्चों को सेवा के लिये भेजा था। गो सून कम सून। उसमें कन्याओं को भेजा था या भाई लोगों को, माताओं को भेजा था?

बाबा – कन्याओं को भी भेजा था। माताओं को भी भेजा था। विश्वकिशोर जैसे भाई तो ज्ञान सुना ही नहीं पाते थे, उनको नहीं भेजा।

Time: 6.11-6.45

Student: Brahma Baba had sent children for service (with a slogan) 'Go soon come soon'. Did he send virgins or brothers or mothers?

Baba: He had sent virgins as well as mothers. Brothers like *Vishwakishore* (*bhai*) did not have the capability to narrate knowledge at all; (so) he was not sent.

समय—9.55—10.11

जिज्ञासु— ड्रामा में मुझ आत्मा के कितने जन्म होंगे, यह किस आधार पर जानूँ?

बाबा – अभी बताया मैं भैंस हूँ, मैं भैंस हूँ तो क्या बन गया? भैंस ही बन गया।

Time: How can I know, how many births will I, a soul take in the drama?

Baba: Just now you were told that (when a person thought) I am a buffalo, I am a buffalo; what did he become? He became a buffalo.

जिज्ञासु – 84 जन्म में मुझ आत्मा के कितने होंगे?

बाबा – जितना स्वयं धारण करेंगे ज्ञान को उतने जन्म होंगे। 84 से ज्यादा नहीं होंगे। एड़वांस में आये हैं तो एड़वांस में जो आ जाते हैं उनका एक जन्म होगा क्या? जो एड़वांस में आने वाले हैं उनका 63 जन्म होगा या उससे ज्यादा होगा? सबका 84 जन्म होगा? जिनका पूरा 84 जन्म होगा उनकी निशानी होगी, क्या निशानी होगी? निश्चयबुद्धि अंत तक विजयते। विजयी बन जावेंगे। भल विनाश हो जावेगा। फिर भी निश्चय हो जायेगा कि दुनियाँ में स्वर्ग की स्थापना हुई पड़ी है। पूछने की बात ही नहीं रहेगी कि मेरे जन्म कितने होंगे। कम जन्म किनके होंगे? विधर्मियों के होंगे या स्वधर्मियों के होंगे? जो दूसरे धर्म में कनवर्ट होने वाले होंगे उनके कम जन्म होंगे। कम जन्म नहीं होने वाले होंगे तो कनवर्ट भी नहीं होंगे। इसलिए अंत तक पक्का निश्चय होने के कारण, निश्चयबुद्धि होने के कारण विनाश का मुकाबला करते रहेंगे। क्या? अंत तक मुकाबला करेंगे। जिसने अंत देखा उसने सब कुछ देखा।

Student: How many births will I, a soul take out of 84 births?

Baba: The number of births will depend on the extent to which you assimilate the knowledge in yourself. It will not be more than 84. When we have entered the path of advance knowledge; so, will those who enter the path of advance knowledge take one birth? Will those who enter the path of advance knowledge take 63 births or more than that? Will everyone take 84 births? There will be assign of those who take complete 84 births; what will the sign be? Those who have a faithful intellect will be victorious till the end. They will become victorious even if destruction takes place. Even so they will become certain that heaven has been established in the world. There won't be any need to ask at all, how many births will I take. Who will take lesser number of births? Will it be the *vidharmis* (those who have inculcations opposite to that said by the Father) or the *swadharmis* (those who have inculcations as that said by the Father)? Those who will be the ones to convert to the other religions will take lesser number of births. If they do not take lesser number of births they won't convert either. That is why because of having firm faith till the end, because of having faithful intellect; they will continue to confront destruction. What? They will confront till the end. The one who saw the end saw everything.

समय—12.11—13.42

जिज्ञासु — हिपनोटाइज (hypnotize) में ऐसी क्या प्रक्रिया करते हैं जो आत्मा को पूर्व जन्म में ले जाते हैं।

बाबा — हिपनोटाइज ऐसी कोई परिक्रिया नहीं होती है। जो पावरफुल आत्मायें होती हैं वो दूसरों को प्रभावित कर लेती हैं, हिपनोटाइज उसको कहा जाता है। 84 जन्म लेने वालों को कोई हिपनोटाइज कर ही नहीं सकता। भूत-प्रेत प्रवेश हो जाते हैं, कहते हैं हमने हिपनोटाइज करना सीख लिया। है तांत्रिक विद्या। भूत-प्रेतों को सिद्ध करनेवाली। किसी को सुला देंगे, उसमें आत्मा प्रवेश कर जायेगी। प्रेतात्मा जिसको सिद्ध किया है। पूछेंगे मज्जे में इसकी जेब में कितने नोट हैं? वो बोलेगा इनकी जेब में इतने नोट हैं। अरे, जो आत्मा प्रवेश है उसको अपना स्थूल शरीर है ही नहीं, स्थूल शरीर, स्थूल कर्मेन्द्रियों के बंधन से परे हैं। उसको जानना ये क्या बड़ी बात है किसकी जेब में कितने पैसे हैं। हिपनोटाइज करके कोई 84 जन्मों की हिस्ट्री बतायें। बता ही नहीं सकेगा।

Time: 12.11-13.42

Student: What procedure do they adopt in hypnotization that they take a soul into his past births?

Baba: Hypnotization is not any such (special) procedure. The powerful souls influence others; that is called hypnotization. Those who take 84 births cannot be hypnotized by anyone at all. Ghosts and spirits enter them (the ones who hypnotize) and they say that they have learnt to hypnotize. It is a *tantric* knowledge which involves controlling the ghosts and spirits. They will put someone to sleep and a soul, a spirit, which has been brought under control, will enter him. (Then) they will ask (that spirit) amidst a gathering, how many notes are contained in his (any person in the gathering) pocket? He (the sleeping person) will say that a particular number of notes are present in his pocket. Arey, the soul that has entered doesn't have its own physical body at all; it is free from the bondage of physical body, physical organs of action. Is it a big issue for it to know, how many notes are contained in his pocket? Let him then tell the history of the 84 births after hypnotizing someone. He won't be able to tell at all.

समय—13.46—14.58

जिज्ञासु — बाबा, बाबा तो बच्चों का 21 जन्मों का भाग्य बनाते हैं, ये मालूम होने से भी बच्चे निश्चय-अनिश्चय में क्यों आते हैं?

Email id: alspiritual@sify.com

Website: www.pbks.info

बाबा – बाबा ने भाग्य बनाया है तो बाबा की पार्शालिटी (पक्षपात) साबित नहीं होती? सब बच्चों का भाग्य बनाता है या कोई का बनता है कोई का नहीं बनता है? भगवान बनाता है या अपने पुरुषार्थ से बनता है? (किसी ने कहा – अपने पुरुषार्थ से) तो ये प्रश्न ही गलत हो गया कि बाबा ने बच्चों का भाग्य बनाया। बाबा किसी का बनाता नहीं और बाबा किसी का बिगाड़ता भी नहीं हैं। बाबा तो आकरके सिर्फ रास्ता बताता हैं। जो उस रास्ते पर चलेगा तो भाग्य बनेगा। नहीं चलेगा तो भाग्य नहीं बनेगा। जो न चलने वाले होंगे वह बाप की बात को मानेंगे भी नहीं।

Time: 13.46-14.58

Student: Baba, Baba indeed builds the fortune of 21 births of children; despite knowing this, why do children pass through the cycle of faith and doubt?

Baba: If Baba has built the fortune, then doesn't it prove Baba's partiality? Does he build the fortune of all the children or is it that someone's is built and someone's is not? Does God build (anybody's fortune) or is it built through their *purusharth* (special effort for the soul)? (Someone said – through their *purusharth*.) So, this very question is wrong that Baba has built the fortune of the children. Baba neither builds anybody's (fortune) nor does he spoil anybody's (fortune). Baba comes and just shows the path. The one who follows that path will build his fortune. If he does not follow then the fortune will not be built. Those who do not follow will not accept the versions of the Father either.

समय—15.02—19.25

जिज्ञासु – ईश्वरीयलोक, चन्द्रलोक बोलते हैं। ऐसे ही पृथ्वी के माफिक वहां भी लोक है क्या?

बाबा – पृथ्वी गोल हैं। इस गोल पृथ्वी में उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव, दो ऐसे छेड़े हैं जहाँ सूरज की किरणें तिरछी पड़ती हैं। मान लो ये पृथ्वी है और यहाँ सूरज चमक रहा है तो सूर्य की रोशनी सामने ज्यादा तीखी पड़ेगी या आजू-बाजू में तीखी पड़ेगी? (किसी ने कहा – सामने।) तो सामने जहाँ सूरज की किरणें सीधी पड़ती हैं वहाँ जीव-जंतू हैं और उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में सूरज की दूरी दूर हो जाती हैं; इसलिए वहाँ कोई जीव-जंतू नहीं हैं। तो सूर्य की निश्चित दूरी होने पर ही जीव-जंतू हो सकते हैं और दूसरे ग्रह-उपग्रह तो कोई बहुत दूर है और कोई बहुत नजदीक है। वहाँ जीव-जंतू होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

Time: 15.02-19.25

Student: People speak about Godly abode (*Ishwariyalok*), *Chandralok* (moon's abode). Is there any abode like Earth there (i.e. on the moon) too?

Baba: Earth is spherical. In this spherical Earth, North Pole and South Pole are two such areas where the rays of Sun fall in an inclined way. Suppose this is Earth and here (opposite to Earth) Sun is shining. So, will the rays of Sun be sharp in the front or on the sides? (Someone said – in the front) So, in the front area where the rays of Sun fall directly, there are living beings and the distance from the Sun increases at the North Pole and South Pole, that is why there are no living beings over there. So, living beings can exist only when the Sun is at a particular distance whereas in the case of the other planets and satellites, some are very far away and some are very close. So, the question of existence of living beings over there doesn't arise at all.

ये तो इस समय का गायन है कि एक-एक सितारे में एक-एक दुनियाँ बसी हुई है। चाहे बुध सितारा हो, चाहे शुक्र सितारा हो, चाहे मंगल तारा हो, चाहे बृहस्पति हो, चाहे पृथ्वी हो। कैसे? इस समय वर्तमान समय में हर सितारा रूपी आत्मा अपनी-अपनी प्रजा तैयार कर रही हैं जन्म-जन्मांतर की। जो जितनी प्रजा तैयार करता है जितनों को संदेश देता है वह उसकी

उतनी बड़ी दुनियाँ बन जाती हैं। कोई इतना पुरुषार्थ करता है कि 500 करोड़ की मनुष्यात्माओं को संदेश देने के निमित्त बन जाता है। कोई इतना पुरुषार्थ करता है कि सिर्फ क्रिश्चियन डिनायस्टी तक सीमित रहता है।

It is in fact a praise of the present time that there is a world in every star. Whether it is a star called Mercury (*Buddh*), whether it is a star named Venus (*Shukra*), whether it is a star named Mars (*Mangal*), whether it is Jupiter (*Brihaspati*), whether it is Earth (*Prithvi*). How? In the present time every soul-like star is preparing its own subjects for many births. The more someone prepares his/her subjects, the more the people whom he gives the message, his world becomes large to that extent. Some person does so much *purusharth* (special effort for the soul) that he becomes an instrument in giving message to 500 crore (5 billion) human souls. Some person does *purusharth* to the extent that he remains limited to the Christian dynasty.

इस समय हर एक आत्मा रूपी सितारा अपनी-अपनी दुनियाँ तैयार कर रहा है। इस समय पुरुषार्थ करके कोई परमात्मा बाप ज्ञान सूर्य के नजदीक पहुँच जाता है, कोई दूर हो जाता है। कोई कब नजदीक, कब दूर। जैसे के आसमान में सितारे होते हैं। कोई चंद्रमा के बहुत नजदीक आ जाते हैं कभी दूर चले जाते हैं। कोई सितारे इकट्ठे होकर के रहते हैं। जहाँ जायेंगे आसमान में वहाँ इकट्ठे-2 दिखाई पड़ेंगे। तो उन जड़ सितारों पर जीवन नहीं है। ये तो सिर्फ एक पृथ्वी लोक हैं। ना चंद्रमा पर जीवन है, ना और किसी ग्रह पर जीवन है। जीवन सिर्फ पृथ्वी के ऊपर है। शास्त्रों में लिखा हुआ है चंद्रमा पर देवतायें रहते हैं। तो उन्होंने चंद्रमा की यात्रा करना शुरू कर दिया। चंद्रमा पर पहुँचे तो क्या मिला? कुछ मिला क्या? कुछ भी नहीं मिला। वेस्टेज ऑफ टाइम, मनी, एनर्जी। मनुष्य जो कुछ करते हैं वह नुकसान ही नुकसान करते हैं।

Now every star-like soul is creating its own world. By doing *purusharth* at this time, someone reaches close to the Supreme Soul Father, the Sun of knowledge and someone becomes distant. Some are close at some point of time and some are distant (at some other point of time). For example there are stars in the sky. Some come very close to the Moon and at some point of time go away from it. Some stars remain together. Wherever they go in the sky, they will be visible together. So, there is no life on those non-living stars. It is only on this Earth (that there is life). There is life neither on the Moon nor on any other planet. Life exists only on the Earth. It has been written in the scriptures that the deities live on the Moon. So, they started traveling to the Moon. When they reached the Moon, what did they get? Did they get anything? They did not get anything. (It was) wastage of time, money and energy. Whatever human beings do, they bring just loss.

समय—19.28—20.40

जिज्ञासु — बाबा, भक्तिमार्ग में कहा गया है कि भगवान ही सुख देता है भगवान ही दुःख देता है। इसकी शूटिंग संगम पर कहाँ होती है?

बाबा — भगवान सुख, दुःख देता है? न किसी को देता है न किसी से लेता है। अगर वह सुख दे, अगर भगवान दूसरों को सुख दे तो दूसरों को सुख देना भी पड़े भगवान को। भगवान आता है तो सुख देते हैं या और ही दुःख देते हैं? 70 साल हो गये भगवान को आये, कोई बात मानता है? और कल्याण के लिए कहता है मेरे को याद करो। अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कोई सुनता है? (किसी ने कहा— नहीं) फिर। हम जैसा को तो कोई एक बार, दो बार, तीन बार बात ना माने तो कितना दुःख हो जाता है। अपने बच्चे ना माने तो और ही ज्यादा दुःख हो जाता है और बाप की तो प्रैक्टिकल में सारी दुनियाँ बनती है।

Time: 19.28-20.40

Student: Baba, it has been said in the path of *bhakti* (devotion) that God Himself gives happiness and God Himself gives sorrow. How does its shooting take place in the Confluence Age?

Baba: Does God give happiness and sorrow? He neither gives (happiness or sorrow) to anyone nor takes it from anyone. If He gives happiness, if God gives happiness to others, then others too will have to give happiness to God. When God comes, do they give happiness or do they give more sorrow instead? It has been 70 years since God has come; does anyone obey His directions? Yet He says for their benefit, Remember Me; consider yourself to be a soul and remember Me, the Father. Does anyone listen? (Someone said – No.) Then? For people like us if someone does not listen to us after saying (something) once, twice, thrice, we feel so sorrowful. If our children do not listen to us, then we feel even more sorrowful and in case of the Father, the (people of the) entire world become His (children) in practical.

समय—20.41—21.35

जिज्ञासु – बाबा, भक्ति में कोई शरीर छोड़ता है तो दस दिन दूर क्यों बैठते हैं बाबा? बेहद में उसका दोष है क्या बाबा?

बाबा – यहाँ भी देहभान छोड़ते हैं कि नहीं छोड़ते हैं? तो टाईम ऐसा आता है ना कि देहभान छोड़ते हैं और जब देहभान छोड़ते हैं तो टाईम लग जाता है कि एकदम हो जाता है? टाईम लगता है। तो जो टाईम यहाँ लगता है देहभान छोड़ने में वो वहाँ भक्तिमार्ग में उन्होंने नूँध दिया है। भक्तिमार्ग में बारह—तेरह दिन मातम मनाते हैं। तेरहवीं करते हैं, ब्राह्मणों को खिलाते हैं।

Time: 20.41-21.35

Student: Baba, if someone leaves the body in (the path of) *bhakti*, then why do people (of the family of the deceased) sit isolated for ten days? Baba, is there an influence of it in an unlimited sense?

Baba: Even here, do we leave the body consciousness or not? So, a time comes when we leave the body consciousness, doesn't it? Moreover, when we leave the body consciousness, then do we take time or does it happen at once? It takes time. So, the time that we take here in leaving the body consciousness has been recorded there in the path of *bhakti* by them. In the path of *bhakti* people mourn for 12-13 days. They celebrate the thirteenth day. They feed the Brahmins.

समय—21.36—23.45

जिज्ञासु – हिन्दुओं में मरने के बाद देह* को जलाया जाता है। तो अभी कुछ जातियों में ऐसा भी देखा जाता है कि हिन्दुओं में भी दबाया जाता है?

बाबा – प्रभावित हो गये विदेशियों से, तो दबाते हैं। यहाँ भी ऐसे बहुत से ब्राह्मण हैं जो विदेशियों से प्रभावित हो जाते हैं तो अपने देहभान को नहीं जला पाते। ज्ञानाग्नि में, योगाग्नि में, तो विदेशी के विदेशी ही रह जावेंगे। जब द्वापरयुग आवेगा तो उनके शरीरों को मिट्टी में दबाया जायेगा। ये शूटिंग यहाँ करते हैं। करना चाहिए देहअभिमान को भस्म करना, योगाग्नि में; लेकिन योगाग्नि में भस्म नहीं कर पाते। देहधारियों के चक्कर में आ जाते हैं। देहधारियों के लगाव में आ जाते हैं। तो देहभान रह जाता है फिर वो देहभान की मिट्टी में गाड़ेंगे।

Time: 21.36-23.45

Student: Among the Hindus, after death, the bodies are burnt. So, now in some castes among Hindus it is also observed that they bury the dead bodies.

Email id: alspiritual@sify.com

Website: www.pbks.info

Baba: They are influenced by the foreigners; so they bury. Even here there are many such Brahmins who become influenced by the foreigners; so, they are unable to burn their body consciousness in the fire of knowledge, fire of *yoga* (remembrance); so they will remain only foreigners. When the Copper Age arrives, then their bodies will be buried in mud. They perform the shooting here. Actually, they should burn the body consciousness into ashes in the fire of *yoga*, but they are unable to burn it into ashes in the fire of *yoga*. They entangle (themselves) in the bodily beings. They develop attachment to the bodily beings. So, the body consciousness remains. Then they will bury that body consciousness in mud.

भक्तिमार्ग में क्रिश्चियन्स और मुसलमान क्या करते हैं? गाड़ते हैं जमीन में। क्यों गाड़ते हैं? क्योंकि संगमयुग में जो भी दूसरे धर्म में कनवर्ट होने वाले ऐसे क्रिश्चियन्स और मुसलमान हैं। वह अपने देहमान की मिट्टी में ही गड़ करके रह जाते हैं। आत्मअभिमानि पूरे नहीं बन पाते। देहमान को जलाकरके भस्म नहीं कर पाते योगाग्नि में। तो कितने जन्म लेंगे? 84 जन्म लेंगे या कम जन्म लेंगे? कम जन्म लेते हैं। (किसी ने कहा – साढ़े चार लाख बीजरूप आत्मायें तो 84 जन्म लेंगे ना?) जन्म 84 लेंगे ही; लेकिन कुछ न कुछ वर्ष कम हो जावेंगे।

In the path of *bhakti*, what do the Christians and Muslims do? They bury (the dead body) underground. Why do they bury? It is because, all such souls who convert into other religions, like the Christians and Muslims in the Confluence Age remain buried in the mud of body consciousness. They are unable to become completely soul conscious. They are unable to burn the body consciousness in the fire of *yoga* (remembrance). So, how many births will they take? Will they take 84 births or lesser number of births? They take lesser number of births. [Someone said – Four and a half lakh (450 thousand) seed-form souls will indeed take 84 births, won't they?] They will definitely take 84 births, but it will be short of few or more years.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.